| NAME OF THE COLLEGE - GODDA COLLEGE, GODDA | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| SL No | Date | Name of the Teacher | Subject | Sem | Topic | Mode Adopted |
| 01 | 13.04.2020 | Md Mahtab Ahmad | TC-201 | B.Ed Sem-02 | Maturation | Pdf |

M.M. Ahmad
Dept of Education
Godda college, Godda

Scanned by CamScanner

## परिपक्वता का अर्थ
## (Meaning of the term Maturation)

परिपक्वता एक नैसर्गिक प्रक्रिया है, इसके लिये बाह्य उद्दीपनों की आवश्यकता नहीं। यह एक प्रकार से मानव की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास है। जैसे बीज से पत्ती, टहनी, फल-फूल इत्यादि प्राप्त हो जाते हैं, वैसे ही प्राकृतिक रूप में किसी पूर्व अनुभव, अधिगम या प्रशिक्षण के बिना परिपक्वन की क्रिया के फलस्वरूप जन्मजात योग्यताओं और शक्तियों में वृद्धि हो जाती है तथा प्राणी में आवश्यक परिवर्तन आ जाते हैं। **बिग्गी** एवं **हंट** (Biggie and Hunt, 1968) ने परिपक्वन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए निम्न विचार व्यक्त किये हैं–

"परिपक्वन एक विकासात्मक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत एक व्यक्ति समय के साथ साथ उन सभी विशेषताओं और गुणों को ग्रहण करता है जिनकी नींव उसके गर्भ में आने के समय ही उसकी कोशिकाओं में रखी जा चुकी है।" (Maturation is developmental process within which a person from time to time, manifests different traits, the blue prints of which have been carried in the cells from the time of his conception.)

इस प्रकार परिपक्वन का सम्बन्ध उन व्यवहारगत परिवर्तनों से होता है जो कि नैसर्गिक और सामान्य वृद्धि (Natural and Normal Growth) से जुड़े हुए होते हैं।

Scanned by CamScanner

## वृद्धि और विकास पर परिपक्वता का प्रभाव (Effect of Maturation on Growth and Development)

जैसे-जैसे आयु में वृद्धि होती है, परिपक्वन (Maturation) के फलस्वरूप शरीर, मस्तिष्क और व्यवहार में प्राकृतिक रूप से विभिन्न परिवर्तन आते रहते हैं। यह बात पक्षियों और पशुओं में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है, जिसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

1. एक चिड़िया माँ बनते हुए अपने अंडे देती है। कुछ समय बाद हम देखते हैं कि उन अंडों में से बच्चे निकल आते हैं। माँ-बाप के द्वारा दिये गये चुग्गे को वे चुगना प्रारम्भ कर देते हैं। फिर कुछ दिनों बाद वे फुदकना प्रारम्भ कर देते हैं, पर उड़ नहीं पाते। परन्तु कुछ समय बाद हमारे देखते-देखते वे एक दिन उड़कर हमसे काफी दूर चले जाते हैं। चुग्गा चुगने, फुदकने और उड़ने सम्बन्धी ये व्यवहारगत परिवर्तन परिपक्वन की प्रक्रिया के ही परिणाम होते हैं, इनके लिये उन्हें अपने माता-पिता या अन्य परिजनों से कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता। आयु में वृद्धि के साथ-साथ ही वे इस प्रकार का व्यवहार स्वाभाविक रूप से ही करने लगते हैं।
2. यही बात मेंढकों तथा मछलियों के साथ भी अंडों में से बाहर निकल कर बड़ा होने, तैरना सीखने तथा भोजन प्राप्त करने के ढंग सीखने में घटित होती है। मेंढकों को जहाँ पानी पर तैरना आ जाता है वहीं जमीन पर फुदकने में भी वे माहिर हो जाते हैं। इस प्रकार के आयु बढ़ने के साथ-साथ व्यवहार में आने वाले परिवर्तन अन्य पशु-पक्षियों में भी हमें अपने चारों ओर नजर आते ही रहते हैं। हिरण के बच्चे का पैदा होते ही कुलाचें भरना, बन्दरों के बच्चों को एक टहनी से दूसरी टहनी तक छलांगें लगाना, मांसाहारी तथा शाकाहारी दोनों प्रकार के पशु-पक्षियों के बच्चों का अपने-अपने ढंग से भोजन प्राप्त करने में माहिर होना आदि बहुत से ऐसे व्यवहारगत परिवर्तन हैं जिनके पीछे परिपक्वन की ही प्रक्रिया का हाथ होना पाया जाता है।
3. परिपक्वन के फलस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन लाने की यह नैसर्गिक प्रक्रिया केवल पशु-पक्षियों या कीड़े-मकोड़ों की दुनिया तक ही सीमित हो, ऐसी बात नहीं है। मनुष्य मात्र में भी जन्म से ही परिवर्तन के फलस्वरूप बालकों में विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों का आना स्वाभाविक-सी ही बात होती है। इस प्रकार के व्यक्तित्व और व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों की संक्षिप्त जानकारी उदाहरणस्वरूप निम्न प्रकार से दी जा सकती है।

   (i) आयु में वृद्धि होने के साथ-साथ बालकों के शरीर में वृद्धि और विकास सम्बन्धी विभिन्न परिवर्तन आते रहते हैं। उनकी लम्बाई बढ़ना, भार में वृद्धि होना, अंगों के अनुपात में परिवर्तन आना, चेहरे या सम्पूर्ण शरीर में विभिन्न प्रकार के आन्तरिक या बाह्य परिवर्तन आना—ये सभी बातें स्वाभाविक रूप से परिपक्वन की प्रक्रिया के फलस्वरूप घटित होती रहती है और फिर किशोरावस्था के आगमन तक बालक और बालिकायें शारीरिक परिपक्वता (Physical maturity) सम्बन्धी सभी प्रकार की शारीरिक वृद्धि और विकास की ऊँचाइयों को छू लेते हैं।

   (ii) यही बात व्यक्तित्व के अन्य सभी आयामों, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक और सौन्दर्यात्मक अनुभूति के विकास और वृद्धि पर समान रूप से लागू होती है। आयु में वृद्धि के साथ-साथ बालकों में इन सभी आयामों से सम्बन्धित वृद्धि और विकास की प्रक्रिया चलती रहती है और किशोरावस्था की समाप्ति तक उनमें इन आयामों से सम्बन्धित मानसिक, संवेगात्मक, नैतिक और सौन्दर्यात्मक परिपक्वता आ जाने से वयस्कों की तरह व्यवहार करने की क्षमता आ जाती है। प्रश्न उठता है कि बालकों में बड़ों की तरह परिपक्व व्यवहार करने की ये जो क्षमता प्रायः किशोरावस्था की समाप्ति तक आती है और उनके व्यवहार में शैशवावस्था तथा बाल्यावस्था के मुकाबले जो विशेष परिवर्तन दिखायी देते हैं, उनके पीछे

Scanned by CamScanner

महज परिपक्वन की प्रक्रिया (Process of maturation) का ही हाथ होता है या वे मात्र किसी विशेष प्रकार के अनुभवों एवं प्रशिक्षण के जरिये सम्पन्न होते हैं।

(iii) इस बात पर विचार किया जाये तो यह बात स्पष्ट रूप से सामने आती है कि मनुष्यों के व्यक्तित्व एवं व्यवहार में जो परिवर्तन आते हैं, उन्हें अन्य जीव-जन्तुओं की तरह केवल मात्र परिपक्वन की प्रक्रिया की देन नहीं कहा जा सकता। उसका कारण यह है कि जाने-अनजाने पर्यावरण में उपस्थित विभिन्न प्रकार की बातें उनके व्यवहार परिवर्तन में सहायक होती रहती हैं। साथ ही उन्हें औपचारिक या अनौपचारिक रूप से अपने व्यवहार परिमार्जन हेतु प्रशिक्षण, अभ्यास तथा अधिगम अनुभव भी प्राप्त होते रहते हैं। अतः किसी भी परिस्थिति में यह कहना उचित नहीं है कि किशोरावस्था की समाप्ति पर उनमें जो व्यवहार या व्यक्तित्व सम्बन्धी परिपक्वता आई है, वह परिपक्वन की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई है अथवा प्रशिक्षण या सीखने के फलस्वरूप ऐसा हुआ है। वास्तविकता तो यही है कि इसे सभी प्रकार से एक संयुक्त उपज (Joint product) माना जाये। कुछ निम्न उदाहरणों से इस मान्यता पर मुहर लगाने में आसानी हो सकती है।

- सबसे पहले अगर बच्चों में भाषा के विकास को ही लेकर देखा जाये तो हम यह पायेंगे कि बालकों में भाषा के विकास हेतु परिपक्वन तथा वातावरण-जन्य प्रशिक्षण और अनुभवों की मिली-जुली भूमिका रहती है। परिपक्वन की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप ही बालकों में आयु के साथ-साथ स्वाभाविक रूप से ध्वनियों का विकास होता है। भाषा सम्बन्धी अक्षर, शब्द तथा वाक्य प्रस्फुटित होते हैं, तथा वह शुद्ध भाषा उच्चारण सीखता है। अगर हम समय से पहले यानी आवश्यक परिपक्वता ग्रहण करने से पहले ही यह अपेक्षा करने लग जायें कि इसके तो माँ-बाप दोनों ही भाषा के पण्डित हैं, हिन्दी में पी०एच०डी० हैं। अतः इसे तो 7–8 माह की आयु में ही हर शुद्ध भाषा को बोलना सिखा देंगे तो यह हमारी भूल होगी। बच्चा शुरु में तुतलायेगा ही, हकलायेगा भी तथा धीरे-धीरे जैसे-जैसे उसके वाक तंत्र का विकास होगा वह सभी ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण सीख सकेगा। अतः यहाँ उसके भाषा शिक्षण तथा प्रशिक्षण में अनावश्यक जल्दबाजी करना ठीक नहीं रहेगा। आवश्यक परिपक्वता ग्रहण करने से पहले उसमें भाषा सम्बन्धी बोलचाल तथा लेखन कला का विकास नहीं हो पायेगा। दूसरी ओर यह बात भी बिना किसी विवाद के सत्य है कि अगर केवल परिपक्वन के लिये ही सब कुछ छोड़ दिया जाये तो जो कुछ आवश्यक भाषा सम्बन्धी विकास बालक को चाहिये वह प्राप्त करना असम्भव ही रहेगा। आज आप और हम भाषा सम्बन्धी जिस विकास की अवस्था पर पहुँच पाये हैं, उसमें निस्सन्देह ही वातावरणजन्य अधिगम अनुभवों एवं प्रशिक्षण की भी काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस तरह भाषा विकास को स्वाभाविक वृद्धि एवं विकास की प्रक्रिया (परिपक्वन) और वातावरणजन्य अनुभवों एवं प्रशिक्षण का संयुक्त परिणाम ही समझा जाना चाहिये।
- जो बात भाषा सम्बन्धी विकास को लेकर सही है, वही बात बालक के मानसिक विकास के अन्य पहलुओं पर भी भली-भाँति लागू होती है। बच्चे की मानसिक शक्तियों जैसे सोचने-विचारने की शक्ति, तर्क शक्ति, स्मरण शक्ति, विभेदीकरण योग्यता, निर्णय क्षमता, विश्लेषण और संश्लेषण योग्यता, समस्या समाधान योग्यता आदि का विकास जहाँ तक एक विशेष परिपक्वन स्तर की माँग करता है, वहीं इनके विकास हेतु पर्याप्त अनुभवों, अभ्यास एवं प्रशिक्षण की महत्ता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। परिपक्वन स्तर से जुड़ी हुई एक विशेष आयु तक पहुँचने से पहले हम बालकों से सूक्ष्म, चिन्तन, कल्पनायुक्त चित्रण तथा गहन तर्क-वितर्क, विभेदीकरण, सामान्यीकरण आदि से युक्त बातों को जानने-समझने की अपेक्षा नहीं कर सकते। इसलिये जिस प्रकार का मानसिक विकास बालकों में सम्पन्न करने की हम चेष्टा करेंगे, उसके लिये पहले हमें इस बात पर अवश्य ध्यान देना होगा कि बालकों में वह परिपक्वता आयी है या नहीं जिसकी जरूरत उनको उस रूप में मानसिक विकास करने

Scanned by CamScanner

के लिए पड़ती है। छोटे बालकों को अगर हम बहुत ही सूक्ष्म, गूढ़, क्लिष्ट तथा बोझिल बातों को बताने या समझाने लग जायें तथा उनसे इस प्रकार के मानसिक विकास की अपेक्षा करने लग जायें तो यह हमारी भूल ही होगी। हमें उचित परिपक्वन स्तर का इन्तजार ही करना पड़ेगा। दूसरी ओर यह बात भी सही है कि जिस तरह के उचित प्रयास, प्रशिक्षण और अनुभव बालकों को उनकी आयु के स्तर को ध्यान में रखते हुये मानसिक विकास हेतु प्रदान किये जाते रहेंगे, उनका मानसिक विकास उसी रूप में ठीक प्रकार सम्पन्न हो सकेगा।

- मानसिक विकास की तरह सामाजिक, संवेगात्मक एवं नैतिक विकास में भी परिक्वन और वातावरणजन्य अनुभवों एवं प्रशिक्षण की भूमिका रहती है। अनुभवों एवं प्रशिक्षण के माध्यम से हम बालक के व्यवहार में जो भी ऐसे अपेक्षित परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं जिससे बालक के सामाजिक और संवेगात्मक विकास में अनुकूल और अपेक्षित सहायता मिले, उन सभी प्रयासों से हमें कितनी सफलता मिलेगी, यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि आयु में वृद्धि के साथ-साथ बालक नैसर्गिक रूप से किस प्रकार की सामाजिक और संवेगात्मक परिपक्वता के स्तर तक पहुँच रहा है। उदाहरण के लिये, जैसे-जैसे बालक की आयु बढ़ती है, उसके सामाजिकता के दायरे, पैमाने तथा सोचने-विचारने के ढंग बदलते रहते हैं। शैशवावस्था, बाल्यकाल, पूर्व-किशोरावस्था तथा किशोरावस्था सभी में एक विशेष प्रकार की सामाजिक एवं संवेगात्मक परिपक्वता बच्चे में पायी जाती है जिसका सीधा असर बालक के सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा संवेगात्मक विकास पर पड़ता है। किशोरावस्था के आगमन से, अपनी परिपक्वता उसे विपरीत लिंग के प्रति यौनाकर्षण में बाँधती है। यहाँ वह सामाजिकता तथा मित्र बनाने के नये अर्थ ढूँढता है और इसी समय इस प्रकार के परिपक्वन से परिपूर्ण होने पर ही उसे यौन शिक्षा (Sex Education) सम्बन्धी गहरे तथ्यों के अधिगम में सहायता मिल सकती है। यौन सम्बन्धी इस परिपक्वता के अभाव में हम उससे यौन शिक्षा सम्बन्धी गहन जानकारी भली-भाँति ग्रहण कर सकने की अपेक्षा नहीं कर सकते। इसी तरह जब तक बालक में संवेगों (Emotions) का स्थायी भावों (Sentiments) के रूप में स्थायी संगठन नहीं बन जाता, तब तक उसके नैतिक विकास की कोई दृढ़ नींव नहीं रखी जा सकती और स्थायी भावों का विकास संवेगात्मक या भावात्मक परिपक्वन के एक विशेष स्तर तक पहुँचने पर ही सम्भव हो पाता है। शैशव काल या बचपन में इसीलिये नैतिक विकास की अधिक अपेक्षा नहीं की जा सकती। किशोरावस्था के आगमन का हमें इसके लिए इन्तजार करना होता है और संवेगात्मक परिपक्वता को ग्रहण करने के साथ ही उस अधिगम का मूल्य अपने आप बढ़ जाता है जिसे नैतिक या चारित्रिक विकास हेतु प्रदान किया जा रहा है।

इस प्रकार से अगर परिपक्वन और वातावरणजन्य अधिगम तथा प्रशिक्षण के अन्तःसम्बन्धों का विश्लेषण किया ाये तो हमें यह समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी कि परिपक्वन की प्रक्रिया चाहे उसका स्वरूप शारीरिक या नसिक हो अथवा सामाजिक, संवेगात्मक या भावात्मक हमें अपने हर रूप में वह सब कुछ प्रदान करने का प्रयत्न रती है जिससे ऐसी आधार भूमि तैयार हो सके जिसके ऊपर अनुभव एवं प्रशिक्षण के माध्यम से अपेक्षित व्यवहार रिवर्तन लाकर व्यक्तित्व निर्माण का कार्य निरन्तर चालू रखा जा सके।

Scanned by CamScanner